

Method of Average Error

Method of Average Error का आविष्कार प्रायः Psychophysical Problems के समाधान के लिए किया जाता है। इस विधि को कई नामों से जाना जाता है जैसे method of adjustment, method of reproduction तथा method of equation भी कहते हैं। यह विधि अपनी निम्नलिखित विशेषताओं के कारण सीमा-विधि से भिन्न है।

① इस विधि की एक विशेषता यह है कि यहाँ प्रयोग को यह निर्देशन दिया जाता है कि वह तुलना-उत्तेजना को मानक-उत्तेजना के साथ इस तरह अभिभोजित करे कि दोनों बरा-बरा लगाने लगे। वह तुलना उत्तेजना को मानक उत्तेजना के साथ तब तक अभिभोजित करता है जब तक कि वह उसकी नजर में मानक-उत्तेजना के बराबर न हो जाए। इसी अभिभोजन के कारण इस विधि को अभिभोजन विधि भी कहा जाता है। यह विशेषता इसे सीमा-विधि से भिन्न बना देती है। सीमा-विधि में अभिभोजन का काम प्रयोग नहीं बल्कि स्वयं प्रयोगकर्ता करता है।

② इस विधि में प्रयोग बरा-बरा मानक उत्तेजना के साथ तुलना-

उत्तेजना को बराबर करने का काम करता है। जब दोनों उत्तेजनाएँ उसके अनुसार बराबर करने का काम करता है। जब दोनों उत्तेजनाएँ हो जाती हैं तो प्रयोगकर्ता उसके निर्णय की जाँच करता है कि उसका निर्णय कहीं तक सही है। जैसे - बूलर-लापर ग्रुम के प्रयोग में प्रयोग परव-रेखा को नीर-रेखा के साथ बराबर करने का काम करता है। इसलिए इस विधि को समता-विधि भी कहते हैं। यह विशेषता भी इस विधि को सीमा विधि से मिन लक्ष बना देती है। सीमा-विधि में यह विशेषता नहीं पाई जाती है।

③ इस विधि में प्रयोग के निर्णय की औसत मात्रा निर्धारित की जाती है। मिन-मिन प्रयत्नों में प्रयोग के निर्णय में त्रुटि होती है, उसका मापन ही औसत अशाह कह लानी है। जैसे बूलर-लापर ग्रुम के प्रयोग में प्रयोग बार-बार परव रेखा को नीर रेखा के बराबर करने का काम करता है। परवा रेखा को नीर की ओर गत बाहर की ओर खींचकर वह भी नीर रेखा के बराबर बनाने का प्रयास करता है। जब दोनों रेखाएँ बराबर हुए आने लगती तो वह पंज को प्रयोगकर्ता को वापस कर देता है।

प्रयोग कला निष्कारित कर लेता है कि प्र-
 भोज्य के निर्माण में कितनी व्यर्थ है। इस
 तरह कई प्रयोगों में प्रभोज्य के निर्माण
 की त्रुटियों को निष्कारित करके उनका औ-
 स्य निकाला जाता है। इसी कारण इस विधि
 को औसत व्यर्थ विधि कहते हैं।

इस विधि में प्रभोज्य
 इस विधि के कुछ विशेष गुण
 हैं जो इस प्रकार हैं -

(a) औसत व्यर्थ विधि में
 उत्तेजना को अनिश्चित ढंग से प्रस्तुत किया
 जाता है। इससे लाभ बढ़ होता है कि प्रभोज्य
 के निर्माण पर पूर्वाभास तथा अभ्यास के
 प्रभाव की सम्भावना बंद जाती है। इस
 दृष्टिकोण से यह विधि सीमा-विधि से
 बेहतर है।

(b) इस विधि की प्रक्रिया
 सरल है। इसलिए छोटे समय में तथा थोड़ी
 मेहनत से प्रभोज्य के निर्माण की जानकारी
 प्राप्त हो जाती है।

(c) इस विधि में प्रभोज्य
 को नीरसता का अनुभव नहीं होता है या
 कम होता है। कारण यह है कि भोज्य प्रभोज्य
 कुछ ही सक्रिय रूप से काम करने लगता है। इसे
 स्वयं तुलना - उत्तेजना तथा मानक - उत्तेजना

को अभिभोजित करके बराबर काना पड़ता है। यह बात सीमा विधि में नहीं है।

(iv) इस विधि में आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण निश्चित रूप से सम्भव होता है।

(v) इस विधि द्वारा प्रयोग की प्रतिक्रिया का मापन प्रलय रूप से सम्भव होता है। इसके साथ-साथ उसकी प्रतिक्रिया का मापन भी स्वाभाविक होता है।

उपरोक्त गुणों के साथ-साथ इस विधि में कुछ दोष भी हैं जो इस प्रकार हैं-

(i) इस विधि में MOVEMENT एजन्स की सम्भावना बढ जाती है। इसमें space एजन्स का खतरा भी बना रहता है। इन दोनो चुटियों के कारण इस विधि का उपयोग प्यल जाता है।

(ii) इस विधि के लिए एक शर्त यह है कि मानक-उत्तेजना तथा उत्पना उत्तेजना दोनों को एक ही साथ प्रस्तुत किया जाए। लेकिन, कुछ परिस्थितियों में दोनो उत्तेजनाओं को एक ही साथ प्रस्तुत करना कठिन होता है। ऐसी हालत में अवसीमा को इस विधि से निष्कारित करना सम्भव नहीं होता है।

(5)

Date _____

Page _____

(C) इस विधि में प्रयत्न को पूर्णतः अनिश्चित करना संभव नहीं होता है। फिर उत्तेजना विधि में यह गुण देखा जाता है। इस आधार पर औसत अशुद्धि-विधि से फिर-उत्तेजना विधि बेहतर प्रतीत होती है।

Dr. Om Prakash Keshri
Deptt of Psychology
Maharaja College,
ARA.